Maa Kali Shabar Mantra

भगवति कालरात्रि शाबरमंत्र

(सर्वरोग, व्याधि, परप्रयोग एवं उपद्रवनाशक)

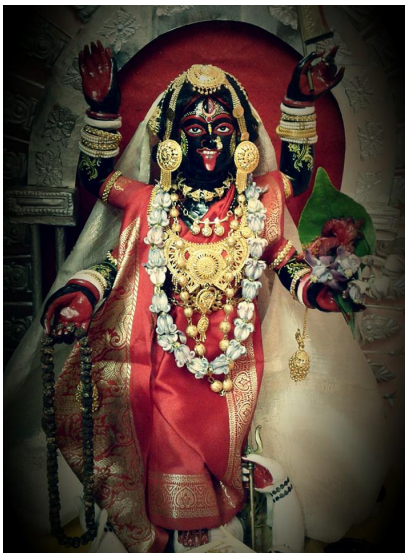

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

मंत्र– 'ॐ नमो भगवति कालरात्रिकलाधरे सकलभयंकरि समस्तरोगप्रयोगाद्यष्टधा संहारिणी अमुकरोगं नाशय-नाशय सकल रोगोच्चाटनकुमारी खिदाडु तुजु कालरुद्र के आँणु। वीरभद्र के आँणु। क्लीं-क्लीं ह्रीं ग्लौं कालरुद्र के आँणु। ह्रीं आदिमाता के आँणु। मेरौ भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। ॐ गुरुप्रसादम्।'

वेदों, पुराणों एवं तन्त्रों की भांति ही शाबरमंत्र विद्या में भी साधकजनों की गहरी आस्था एवं रूचि पायी जाती है। विशिष्ट साधक हो या साधारणजन, दोनों ही शाबरमंत्र से लाभान्वित होकर अपना कल्याण कर सकते हैं। शाबर मंत्रों में विनियोग, ध्यान एवं न्यास आदि अन्य आवश्यक नियमों की विशेष आश्यकता नहीं होती, जिससे निम्नकोटि साधक वर्ग भी सरलता से शाबरमंत्रों को सिद्ध कर सकता है। फिर भी पुस्तक या किसी स्थान से देखकर, स्वयं मंत्र चयन करके, उसका जप एवं अभ्यास अपूर्ण ही कहा जायेगा। शाबर मंत्रों में भी सिद्धि एवं पूर्ण सफलता हेतु अनुभवी गुरु की निःसन्देह परम आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त गुरु के उचित मार्गदर्शन से साधक को

किसी प्रकार की हानि भी नहीं होती। शाबरतंत्र के आदिप्रणेता जगत्गुरु महादेव ही माने जाते हैं। इस विषय में तुलसीदासजी 'रामचरितमानस' में कहते हैं–

कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा।

साबरमंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।।

अनमिल आखर अरथ न जापू।

प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू।।

अर्थात् 'जिन शिवपार्वतीने कलियुग को देखकर, जगत् के हित के लिये, शाबर मंत्रसमूह की रचना की, जिन मन्त्रों के अक्षर बेमेल हैं, जिनका न कोई ठीक अर्थ होता है और न ही जप होता है, तथापि श्रीशिवजी के प्रताप से जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष है।'

प्रस्तुत शाबरमंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है जिसमें भगवती कालरात्रि से रोग, परप्रयोग एवं व्याधियों से रक्षा हेतु प्रार्थनी की गयी है। पर्वकाल या ग्रहणकाल में मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात् शुभकाल या तिथि में विधिवत् मंत्र का जप करें। रात्रिकाल में जितेन्द्रियपूर्वक चण्डिका देवी के सम्मुख होकर दस हजार जप करें। ऐसा करने से सात रात्रि में ही मंत्र की सिद्धि हो जाती

है। दूब, अन्न, तिल, गुग्गल एवं शुद्ध घृत से दशांश हवन सम्पन्न करने तथा कन्या पूजन एवं भोजन कराने से समस्त उपद्रवों की शान्ति होती है तथा भगवती काली का परम सान्निध्य प्राप्त होता है। हवनीय द्रव्य की भस्म (निमित्त मात्र) को गरम जल के साथ ग्रहण करने से असाध्य रोगों का शमन होता है एवं शतायु प्राप्त होती है। अन्य गुप्त विधान गुरुमुख से प्राप्त करें।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

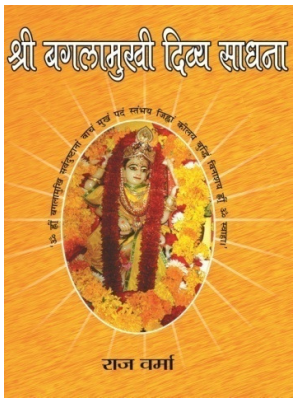

श्री बगलामुखी दिव्य साधना
राज वर्मा